वन्दे चरणारविन्दम्



चरणारविन्दोपासक

वन्दे चरणारविन्दम्

चरणारविन्दोपासक एवं लेखक

पं० दामोदर नेहरु

प्रकाशक

भगवानदास दुबे

३४/१८८, खातीपाड़ा (जटपुरा) श्री रामचन्द्र जी

का मन्दिर, लोहामण्डी आगरा-२

प्रथम संस्करण—१९९५

मूल्य—१५ रु० मात्र

मिलने का पता—

पं० दामोदर नेहरु

१०८, पक्की डिक्की जम्मूतवी

मुद्रक—

नीलम ग्राफिक एण्ड ऑफसेट प्रिन्टर्स

अहीर पाड़ा राजा मण्डी आगरा-२

भूमिका

'वन्दे चरणारविन्दम्' के अन्तर्गत भगवान् विष्णु और उनके अवतारों के उन चरण-कमलों की आठ श्लोकों में वन्दना की गयी है जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की अनन्त लीलाओं का आधार हैं। लीला शब्द का अर्थ होता है— अभिनय। अभिनय में क्रिया तो होती है लेकिन अभिनेता में कर्त्तापन का अभिमान शेष नहीं रहता। जब व्यक्ति संसार में कर्त्तापन के अहंकार को त्यागकर भगवान् के प्रति समर्पित होकर कर्मरत होता है तो कर्म उसके लिये अभिनय-मात्र, खेल-मात्र, नाटक-मात्र, लीला-मात्र हो जाता है। सांसारिक जीवन के नाट्य-मञ्च पर वह एक अभिनेता की तरह अभिनय करता हुआ, जीवन के तनावों व विषादों से मुक्त रहता हुआ, परम-शान्ति, परमानन्द एवं अमृत-पद को प्राप्त होता है।

'वन्दे चरणारविन्दम्' में भगवान् विष्णु एवं उनके अवतार भगवान् श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण के उन चरण-कमलों की स्तुति की गयी है जिनके स्मरण-मात्र से भक्तों के दैहिक, दैविक एवं भौतिक ताप विनष्ट हो जाते हैं और मन स्वच्छ और विमल दर्पण की भाँति हो जाता है। ऐसे विमल-मन-दर्पण में भक्त पल-पल, क्षण-क्षण भगवान् की सम्पूर्ण ब्रह्माण्डीय लीलाओं का दर्शन करता हुआ सुख और आनन्द, शक्ति और शान्ति को उपलब्ध होता है। प्रिय पाठक वृन्द ! तो आइये और 'वन्दे चरणारविन्दम्' का रसास्वादन कीजिये।

डॉ० जवाहिर लाल ओगरा
प्रधान वैज्ञानिक
बकरी-अनुसंधान केन्द्र, मखदूम
फरह, मथुरा

एकश्लोकी भागवत

आदौ देवकि—देवगर्भ जननं गोपीगृहे-वर्धनम्।
माया-पूतनि-जीविताप-हरणं गोवर्द्धनो-द्धारणम्
कंस-च्छेदन कौरवादि-हननं कुन्ती सुता-पालनम्
एतत्-भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्ण-लीलामृतम्।

वन्दे चरणारविन्दम्
के
श्लोकों का फल

इत्यष्टकं पठति यः परमस्य पुंसो
नारायणस्य निरयार्णवतारणस्य।
सर्वाप्तिमाशु हृदये कुरुते मनुष्यः
संप्राप्य देहविलयं लभते च मोक्षम्।।

भावार्थ—भगवान् नारायण की इस स्तुति के आठ श्लोकों का पाठ जो मोक्षाभिलाषी पुरुष सच्चे दिल से और भक्ति भाव से नित्य-प्रति करता है उसे इस दुःख-सागर से पार उतरने का उपाय मिल जाता है। मनुष्य की सम्पूर्ण इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। वह जीवन्मुक्ति का सुख भोगते हुए अन्त में स्वरूपस्थिति करके निर्वाण पद प्राप्त करता है।।

।। ॐ ।।

वन्दे चरणारविन्दम्

कलियुग में श्रेष्ठ बुद्धिसम्पन्न पुरुष ऐसे यज्ञों द्वारा भगवान् श्री नारायण की आराधना करते हैं, जिनमें नाम, गुण, लीला आदि के कीर्तन की प्रधानता रहती है वे लोग भगवान् की स्तुति इस प्रकार गाते हैं—

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।१।।

हे नारायण ! आपके चरणारविन्द सदा-सर्वदा ध्यान करने योग्य हैं। वे माया-मोह के कारण होने वाले सांसारिक पराजयों का अन्त कर भक्तों को समस्त अभीष्ट वस्तुओं को देने वाले कामधेनु-स्वरूप हैं। वे तीर्थों को भी तीर्थ बनाने वाले स्वयं परम् तीर्थ स्वरूप हैं। शिव, ब्रह्मा आदि बड़े-बड़े देवता उन्हें नमस्कार करते हैं। चाहे जो कोई उनकी शरण में आ जाय, उसे स्वीकार कर लेते हैं। सेवकों की समस्त आर्ति और विपत्ति के नाशक तथा

संसार-सागर से पार जाने के लिए जहाज हैं। हे महापुरुष ! मैं आपके उन्हीं चरणारविन्दों की वन्दना करता हूँ।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सित राज्य लक्ष्मी
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।२।।

प्रभो ! आपके चरण कमलों की महिमा से ही रामावतार में अपने पिता दशरथ जी के वचनों से देवताओं से भी इच्छा की गई और त्याग न की जाने वाली राज्यलक्ष्मी को छोड़कर आप बन-बन घूमते फिरे। सचमुच आप धर्मनिष्ठ हैं। अपनी प्रेयसी सीता जी के चाहने पर जान-बूझकर आपके चरण कमल माया मृग के पीछे दौड़ते रहे। हे महापुरुष ! मैं आपके उन्हीं चरणारविन्दों की वन्दना करता हूँ।।

श्रीमत्सरोरुहयवांकुश चक्रचाप
मत्स्याङ्कितं नवविलोहितपल्लवाभम्।
लक्ष्म्यालयं परम मङ्गलमात्मरूपं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।३।।

हे महापुरुष ! मैं आपके उन चरणारविन्दों की वन्दना करता हूँ जिनके तलबों पर कमल, गेहूँ का खोशा, महावत का अंकुश,

चक्र, धनुष और मछली के शुभ चिह्न अंकित हैं, और जो नये निकले चिकनाई वाले लाल पत्तों के समान चमकते हैं। जिन्हों ने लक्ष्मी के हृदयस्थल को अपना निवास बनाया है और परम मङ्गल को देने वाले तथा आत्मस्वरूप वाले हैं।।

वृन्दावनान्तरमगादनु गोकुलानां
सञ्चार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्धकामी।
सञ्चिन्तयदगगुरोर्मृगपक्षिणां यत्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।४।।

प्रभो ! कृष्ण अवतार में जो चरण कमल इन्द्र के क्रोध से सताए हुए भोले-भाले गोकुल के लोगों को वृन्दावन में गोवर्धन पर्वत के नीचे ले गए और जिन चरणों के बल पर ही आपने अपनी छोटी अंगुली पर सात दिन तक उस पर्वत को वहाँ के पशुओं और पक्षियों के रक्षार्थ धारण किया, हे महापुरुष ! मैं उन्हीं आपके चरणकमलों की वन्दना करता हूँ।।

यद्गोपिकाविरहजाग्नि परीतदेह—
स्तप्तास्तनेषु विजहुः परिरभ्य, तापम्।
रासे तदीयकुचकुंकुमपंङ्कलिप्तं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।५।।

हे महापुरुष ! मैं आपके उन चरणकमलों की वन्दना करता

हूँ जिनके केवल छू लेने से रास क्रीड़ा में प्रेम से पीड़ित गोपियों की प्रेम-पीड़ा शान्त हो गई और जो चरण-कमल उन्हीं गोपियों के कुचों पर लगे कुंकुम-चन्दन के लेप से रंग गये ।।

कालीयमस्तकविघट्टनदक्षमस्य
मोक्षेप्सुभिर्विरहदीनमुखाभिरारात् ।
तत्पत्निभिः स्तुतमशेषनिकामरूपं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। ६ ।।

वीर शिरोमणि कृष्ण के रूप में हे महापुरुष ! हम आप के उन चरण-कमलों की वन्दना करते हैं जो कालीनाग के सिर को दबाने में दक्ष रहे और जिनकी ओर उसकी पत्नियाँ दूर से और समीप से प्रार्थना करती रहीं कि आप उस (नाग) को पीड़ा-मुक्त कर दें और उन्हें उन के प्राणप्रिय पतिदेव से जुदाई के कष्ट का निवारण करें ।।

ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यमनादिमर्च्यं
ब्रह्मादिभिर्हृदि विचिन्त्यमगाधबोधैः ।
संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। ७ ।।

प्रभो ! जिन चरणों को श्रुति-ज्ञान प्राप्त करके ही ढूँढ़ा जाता है, जो अनाद्य हैं, जिन्हें ब्रह्मा आदि देवता हृदय में दृढ़ धारणा से ध्यान में लाते हैं और जो संसार-रूप कुएँ में डूबे हुए जनों के

आश्रय-मात्र हैं। हे महापुरुष ! मैं उन्हीं आप के चरण-कमलों की वन्दना करता हूँ।।

येनाङ्कपालवपुषः स्तनपानबुद्धे-
स्त्वदंघ्रिणाहतमनो, विपरीतचक्रम्।
विध्वस्तभाण्डमपतद्भुवि गोपमूर्ते-
र्वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।८।।

हे बालकृष्ण ! आपके प्रथम जन्म-दिवस पर माता यशोदा ने आप को नन्दबाबा के छकड़े के नीचे साये में इसलिए लिटाया था कि आप दिशा-बदलना सीख जायें। छकड़ा धूप में खड़ा था। शकटासुर ने मौका पाकर किसी पूर्व शाप के कारण छकड़े में बैठने का अवसर पाया ताकि आप के शिशु-शरीर को मसल डाले। परन्तु उसके दुष्ट-विचार को जान आप ने माता से दूध पीने के बहाने अपने छोटे पैरों को हिलाया। इससे गाड़ी झट उलट गई और दूध के सारे बर्तन संहित शकटासुर का मर्दन हुआ। इससे लोमश ऋषि की प्रतिज्ञा के अनुसार उसकी ऋण-मुक्ति हुई। हे महापुरुष ! मैं आपके उन्हीं चरण-कमलों की वन्दना करता हूँ।।

श्लोकों के शब्दार्थ

१. महापुरुष	हे महापुरुष
ते	आप के
चरणारविन्दम्	कमल जैसे चरणारबिन्द को हम
वन्दे	वन्दना करते हैं
सदा ध्येय	जो नित्य ध्यान करने योग्य हैं
परिभवघ्नम्	जो संसार सागर में डूबे हुओं की

अभीष्ट दोहं	कामनाओं को देने वाले काम धेनु स्वरूप हैं,
तीर्थास्पदं	जो तीर्थ स्वरूप हैं
शिव विरिञ्च	जिन को शिव, ब्रह्मा आदि बड़े-बड़े देवता
नुतं	नमस्कार करते हैं,
शरण्यम्	जो शरण देने के योग्य हैं
भृत्य	जो सेवकों
आर्तहं	की आर्ति को समाप्त करते हैं,
प्रणतपाल	जो शरण में आये हुए का पालन करने वाले
भवाब्धि	और संसार सागर से
पोतं	पार ले जाने के लिए जहाज हैं
२. सुरेप्सित	देवताओं से इच्छा की गई
सुदस्त्यज	अत्यन्त कठिनाई से त्याग की जाने वाली
राज्यलक्ष्मी	राज्य लक्ष्मी को
त्यक्त्वा	छोड़कर
यत्	जो (चरणकमल)
धर्मेष्ट	धर्मनिष्ट
आर्य वचसा	पिता जी के वचन से
अरण्यम्	जङ्गलों
अगाद्	को चले गए
मायामृगं	और मायारूपी मृग के,
दयितये	प्रेयसी सीता जी के
ईपिस्तम्	चाहने पर, जान बूझ कर
अन्वधावत्	पीछे दौड़ते रहे ।

महापुरुष	हे महापुरुष
ते	आपके
चरणारविन्दम्	उन कमल के समान चरणों
वन्दे	की जय-जय कार हो
३. श्रीमत्	जिन चरणों के तलवों पर शोभायमान और चमकीला
सरोरुह	कमल
यव	गेहूँ का खोशा
अंकुश	महावत का अंकुश,
चक्र	चक्र,
चाप	धनुष, (और)
मत्स्य	मछली के
अंकित	शुभ चिह्न अङ्कित हैं
नव	और नये
विलोहित	निकले चिकनाई वाले
पल्लवाभम्	लाल पत्तों के समान चमकते हैं। (जिन्होंने)
लक्ष्म्यालयं	लक्ष्मी के हृदयस्थल को अपना निवास बनाया है।
परममङ्गलम्	(जो) उत्कृष्ट कल्यान रूप
आत्मरूपं	आत्मस्वरूप को देने वाले हैं,
महापुरुष	हे महापुरुष
ते	आप के
चरणारविन्दम्	उन चरणार-बिन्दों की।
वन्दे	हम वन्दना करते हैं।
४. यत्	जिस चरण कमलने
मृगपक्षिणांयत्	मृग और पक्षियों आदि समेत
अनु गोकलानां	गोकुल के लोगों को पीछे-

	पीछे लेते हुए
सञ्चार्य सर्वपशुभि:	सारे पशुओं को समेंट कर
स्वविवृदकामी	अपनी आत्मा में आप ही उनके आत्म स्वरूप में स्थित हो
वृन्दावन	वृन्दावन में
अन्तरम्	अन्दर
अगात्	चले गए और
अगगुरो:	भारी-पर्वत गोवर्धन को
सञ्चिन्तयद्	(सात दिन तक कनिष्टिका पर) उठाये रखा
महापुरुष	हे महापुरुष (उन)
ते	आपके उस
चरणारविन्दम्	चरणकमल की
वन्दे	हम वन्दना करते हैं
५. यत्	जिन पादों को छू लेने से
गोपिका	गोपियों की
विरहजाग्नि	प्रेमविरह की अग्नि से पीड़ित
परीत देहस्	शरीर की संज्ञा खो कर
तप्तस्तनेषु	प्रेम-तपन
विजहु:	शांत हो गई
परिरभ्य तापम्	और सन्ताप समाप्त हुआ ।
रासे	रास क्रीडा में
तदीय	उन की प्रेम पीड़ित
कुच	कुच-कुम्भ (जिन चरणकमलों के)
कुंङ्कम	कुंकुम चन्दन के
पङ्कलिप्तम्	लेपसे लिपायमान हो

	गए या रंगे गये ।
महापुरुष	हे महा पुरुष
ते	उन आप के
चरणारविन्दम्	चरणकमल की
वन्दे	वन्दना करते हैं ।
६. अस्य	(जो चरण) इस
कालीय	काली नाग के
मस्तक, विघट्टन	सिर को दबाने में
दक्षम्	दक्ष रहे
तत्पत्निभि:	उसकी पत्नियाँ
निकामरूपम्	अति शयरूप से
स्तुतमशेष	स्तुति करती रहीं
विरहदीन	जुदाई के कष्ट से दीन हुई
मोक्षेप्सभि:	और अपने पति की मुक्ति के लिये
मुखाभिरारात्	मुखों से प्रार्थना करती रही
महापुरुष	हे महापुरुष
ते	आप के
चरणारविन्दम्	चरण कमल की
वन्दे	वन्दना करते हैं ।
७. ज्ञानालयं	जो चरणरविन्द आप के ज्ञान का केन्द्र या यन्त्र है
श्रुतिविमृग्यम्	वेद वाक्यों द्वारा ढूढ़ा जाता है
अनाधम्	अनाद्य है
अर्च्यं	पूज्यनीय है
ब्रह्मादिभि:	और जिसे ब्रह्मा आदि देवता

हृदि	हृदय में
विचिन्त्यम्	श्रुति के अगाध ज्ञान द्वारा
अगाधबोधै	ध्यान में लाते हैं
संसारकूपपतित	और जो संसार रूप कुएँ में डूबे हुए जनों को
उत्तरणावलम्ब	पार जाने का आश्रय मात्र है
महापुरुष	हे महापुरुष
ते	आपके
चरणारविन्दम्	उस चरणकमल की
वन्दे	वन्दना करते हैं।
८. येन	जिस आप ने (छकड़े के नीचे रखे)
अङ्कपाल	शिशु के
वपुषः	शरीर में
स्तनपानबुद्धि	माता से स्तन पान करने की इच्छा से
त्वदंघ्रिणा	तुम्हारे छोटे पैर के हिलाने से
हृतमऽडनो	माता के मन को मोहित कर के
गोपमूर्ते	नन्दबाबा
विपरीत चक्रम्	का छकड़ा उलट दिया (शक टासुर को नष्ट करने के लिये)
भाण्डमपतद्	दूध के सारे बर्तन सहित
विध्वस्त	(छकड़े को) पृथ्वी पर गिराकर सब नष्ट किया
महापुरुष	हे महापुरुष

ते	आप के
चरणारविन्दम्	उस चरण कमले की
वन्दे	वन्दना करते हैं ।

फल-श्लोकार्थ

यः	जो मोक्षाभिलाषी
पुंसो	मनुष्य
परमस्य	परमात्मा का सच्चे दिल से और भक्ति-भाव से
नारायण्स्य	नारायण की
इत्यष्टकं	इस स्तुति के आठ श्लोकों का
पठति	पाठ करता है
निरयार्णव	उसे इस दुखरूपी संसार सागर से पार उतरने का उपाय मिल जाता है
सर्वाप्तिम	और सारी इच्छायें
आशु	जल्द अज़ जल्द
हृदये	उसके हृदय में
कुरुते मनुष्यः	पूरी करता है ।
संप्राप्य	वह जीवन्मुक्ति के परम आनन्द का सुख भोगते हुए
देहविलयं	देह के अन्त में
लभते	स्वरूपस्थिति प्राप्त करता है
च	और
मोक्षम्	निर्वाण पद प्राप्त करता है ।